Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 4, July-2022, ISSN 2230-7540

नाबार्ड बैंक के प्रदर्शन मूल्यांकन पर एक अध्ययन

Rakesh Meena[1]*, Vikram Meena[2]

[1] Research Scholar, University of Rajasthan

[2] Research Scholar, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur

सार- यह अध्ययन नाबार्ड के प्रदर्शन वश्लेषण के मूल्यांकन के लए कया गया है। नाबार्ड एक वत्तीय संस्थान है जिसे भारत सरकार द्वारा देश में स्थायी कृ ष और ग्रामीण वकास को बढ़ावा देने के लए स्था पत कया गया था। नाबार्ड के कार्यों में तकनीकी नवाचारों का प्रचार, वत्तीय और गैर- वत्तीय समाधान और संस्थागत वकास शा मल हैं। उपर्युक्त बैंक के वत्तीय प्रदर्शन का मूल्यांकन पछले पांच वर्षों यानी 2015, 2016, 2017, 2018 और 2019 के लए कया गया है। डेटा का वश्लेषण व भन्न अनुपातों और वकास वश्लेषण द्वारा कया गया था। इस लेख को समाप्त करने के लए अध्ययन अव ध के दौरान बैंक की वत्तीय सुदृढ़ता संतोषजनक है और बैंक अपनी नि धयों द्वारा अपनी पूंजी बढ़ाकर जमा पर उधार देने को कम कर सकता है।

कीवर्ड- वत्तीय प्रदर्शन, अनुपात वश्लेषण, वकास वश्लेषण, प्रदर्शन, ग्रामीण वकास

----------X----------

1. परिचय

वत्तीय प्रदर्शन वत्तीय गति व ध को निष्पादित करने के कार्य का प्रतिनि धत्व करता है। यह इं गत करता है क वत्तीय उद्देश्यों या लक्ष्यों को कस हद तक पूरा कया गया है। कंपनी के वत्तीय प्रदर्शन को मौद्रिक रूप में मापा जाता है और इसका उपयोग निर्णय लेने के उद्देश्य से कया जाता है। कसी कंपनी का वत्तीय प्रदर्शन कसी वशेष अव ध के लए कंपनी के वत्तीय स्वास्थ्य को दर्शाता है। इस प्रकार वत्तीय प्रदर्शन वश्लेषण वत्तीय ववरण वश्लेषण के अनुप्रयोगों के माध्यम से एक फर्म की लाभप्रदता और वत्तीय स्वास्थ्य का व्यवस्थित रूप से उ चत, महत्वपूर्ण और तुलनात्मक मूल्यांकन करने की एक प्र क्रया है।[1]

नाबार्ड का इतिहास

नेशनल बैंक फॉर एग्रीकल्चर एंड रूरल डेवलपमेंट (NABARD) की स्थापना 12 जुलाई 1982 को संसद के एक अ धनियम द्वारा की गई थी। नाबार्ड, एक वकास बैंक के रूप में, ग्रामीण क्षेत्रों में कृ ष, लघु उद्योग, कुटीर और ग्राम उद्योग, हस्त शल्प और अन्य ग्रामीण शल्प और अन्य संबद्ध आ र्थक गति व धयों के प्रचार और वकास के लए ऋण और अन्य सु वधाएं प्रदान करने और वनिय मत करने के लए अनिवार्य है। एकीकृत ग्रामीण वकास को बढ़ावा देने और ग्रामीण क्षेत्रों की समृद् ध हा सल करने के लए, और उससे जुड़े या प्रासं गक मामलों के लए। नाबार्ड का दृष्टिकोण ग्रामीण समृद् ध को बढ़ावा देना है। मशन समृद् ध हा सल करने के लए सहभागी वत्तीय और गैर- वत्तीय हस्तक्षेप, नवाचार, प्रौद्यो गकी और संस्थागत वकास के माध्यम से टिकाऊ और समान कृ ष और ग्रामीण वकास को बढ़ावा देना है। नाबार्ड पूरी तरह से भारत सरकार के स्वा मत्व में है। नाबार्ड का मुख्यालय मुंबई में है, हसनबार्ड का मुख्यालय मुंबई में है, इसके 31 क्षेत्रीय कार्यालय राज्यों और केंद्र शा सत प्रदेशों में स्थित हैं, श्रीनगर में एक प्रकोष्ठ है, भारत के उत्तरी, पूर्वी और द क्षणी भागों में 04 प्र शक्षण प्रतिष्ठान और 414 जिले हैं। जिला स्तर पर कार्यरत वकास प्रबंधक। नाबार्ड के पास 2243 पेशेवर हैं जिन्हें 1130 अन्य कर्मचारियों की सहायता प्राप्त है।[2]

2020-21 के दौरान नए घटनाक्रम

1. एनबीएफसी,एनबीएफसी-एमएफआई के लए आं शक क्रे डट गारंटी योजना के लए पायलट योजना:

ऋण और पूंजी बाजार से धन जुटाने के लए कृ ष, एमएसएमई और माइक्रोफाइनेंस क्षेत्रों में ऋण देने वाले

www.ignited.in

छोटे एनबीएफसी और एनबीएफसी-एमएफआई को सक्षम करने के लए यह योजना शुरू की गई है।[3]

आं शक ऋण गारंटी नाबार्ड द्वारा अकेले या एक या अ धक वत्तीय सु वधा एजेंसी के साथ प्रदान की जा सकती है, जो सह-गारंटर के रूप में भी कार्य करेगी और गारंटी जो खम को साझा करेगी। यह योजना एक पायलट उत्पाद के रूप में शुरू की जाएगी जिसमें मौजूदा बाजार के खला ड़यों के साथ एक-एक पायलट के रूप में ₹100 करोड़ के दो लेनदेन कए जाएंगे। इससे जमीनी स्तर पर उच्च ऋण प्रवाह उत्पन्न करने और भ वष्य में छोटे एनबीएफसी/एनबीएफसी-एमएफआई को नाबार्ड के पुन र्वत्त ग्राहकों के रूप में वक सत करने में मदद मलेगी।

2. एनबीएफसी के साथ जुड़ाव - थर्ड पार्टी पूल वश्लेषण

बाजार की स्थितियों और एनबीएफसी से पुन र्वत्त की मांग को ध्यान में रखते हुए, एनबीएफसी आवेदनों की मूल्यांकन प्र क्रया को मजबूत कया गया है। एक तृतीय पक्ष पूल वश्लेषण और एनबीएफसी की ताकत की निगरानी मौजूदा निगरानी और मूल्यांकन तंत्र के अतिरिक्त होगा। बाहरी एजें सयों की रिपोर्ट एनबीएफसी के बारे में व भन्न प्रारं भक चेतावनी संकेतों और एनबीएफसी क्षेत्र के संबंध में बाजार की जानकारी प्रदान करेगी।[4]

3. एसएफबी को एसटी पुन र्वत्त

कृ ष कार्यों के लए कसानों को ऋण उपलब्धता, एमएसई क्षेत्रों में कार्यशील पूंजी ऋण, खुदरा व्यापार, छोटे व्यवसायों, पेशेवरों और अन्य असंगठित क्षेत्र को ब्याज की सस्ती दर पर ऋण की सु वधा प्रदान करके वत्तीय समावेशन में तेजी लाने के लए, एसएफबी को पात्र संस्था के रूप में शा मल कया गया था एसटी पुन र्वत्त का लाभ उठाएं। 2020-21 के दौरान नॉर्थ ईस्ट एसएफबी को 49 करोड़ रुपये की रा श दी गई है।[5]

2. साहित्य की समीक्षा

अनीता, जेबासेल्वी, **(2020)** ने खुलासा कया क ग्रामीण वकास अ धक से अ धक महत्वपूर्ण होता जा रहा है, नाबार्ड ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सभी पहलुओं को छूता है। नाबार्ड रोजगार के नए अवसर पैदा करता है और देश की कम सेवा वाली आबादी को वत्तीय सहायता प्रदान करता है और बैंकों के कामकाज और वनियमन की संस्था की निगरानी भी करता है। नाबार्ड देश भर के लाखों ग्रामीण परिवारों के लए वरदान रहा है। नाबार्ड ग्रामीण अर्थव्यवस्था के मौजूदा और भ वष्य के वकास की रीढ़ है। ग्रामीण क्षेत्र में नाबार्ड द्वारा की गई वत्तीय पहलों से भारतीय अर्थव्यवस्था के उद्भव में महत्वपूर्ण भू मका निभाने की उम्मीद है।[6]

प्रो. डॉ. वंदना के. मश्रा **(2015)** ने खुलासा कया क ग्रामीण ऋण संरचना में नाबार्ड की भू मका का वश्लेषण कया गया है। ग्रामीण ऋण संरचना में प्राथ मकता क्षेत्र शा मल है और इस क्षेत्र को ऋण वतरित करने में जबरदस्त उपलब्धि हा सल की गई है। पूरे अध्ययन के दौरान प्राथ मकता प्राप्त क्षेत्र के ऋणों का प्रतिशत अ धक रहा। 2013-14 के दौरान कृ ष ऋण प्रवाह का लक्ष्य 700,000 करोड़ रुपये नर्धारित कया गया था और उपलब्धि 7,23,225 करोड़ रुपये थी, जो लक्ष्य का 103% है। नाबार्ड ने अर्थव्यवस्था में कृ ष क्षेत्रों के वकास के लए अल्पका लक और साव ध-ऋण के माध्यम से कृ ष क्षेत्र को धन उधार दिया है।[7]

वीरपॉल कौर मान और अमृतपाल संह **(2013)** ने "कृ ष क्षेत्र के वकास में नाबार्ड और आरबीआई की भू मका" नामक एक अध्ययन में वश्लेषण कया क नाबार्ड ने राज्य सहकारी बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के संबंध में भारतीय रिजर्व बैंक से पुन र्वत्तीयन कार्यों को ले लया है। इस अध्ययन से पता चलता है क नाबार्ड वश्व बैंक और उसके सहयोगी, अंतर्राष्ट्रीय वकास संघ (आईडीए) द्वारा सहायता प्राप्त परियोजनाओं के कार्यान्वयन में शा मल है। नाबार्ड बाहरी ऋण के साथ 42 परियोजनाओं के कार्यान्वयन से जुड़ा हुआ है, जिनमें से 38 परियोजनाओं को आईबीआरडी द्वारा सहायता प्रदान की जाती है। [8]

रॉबसन व लयम बी.पी., बर्गे वन फ लप **(2012)** इस अध्ययन का तर्क है क कनाडा की संघीय सरकार, जिसने 1991 में रियल-रिटर्न बॉन्ड (आरआरबी) जारी करना शुरू कया था, को वर्तमान में करने की योजना से अ धक प्रकार के आरआरबी जारी करने चाहिए। अ धक आरआरबी जारी करने से न केवल निवेशकों की मौजूदा मांग को बेहतर ढंग से पूरा कया जा सकेगा; इसमें अन्य मूल्य-अनुक्र मत उपकरणों के वकास को प्रोत्साहित करने की क्षमता है। कहीं और अनुभव बताता है क अ धक संघीय आरआरबी अन्य संस्थाओं को मूल्य-सूचकांक ऋण जारी करने के लए प्रोत्साहित कर सकते हैं, और बिचौ लयों को मुद्रास्फीति से जुड़े वा षकी के रूप में ऐसे उत्पाद प्रदान करने देंगे, इस प्रकार अ धक कनाडाई बचतकर्ताओं को

www.ignited.in

जानबूझकर या आकस्मिक मुद्रास्फीति के खलाफ सुरक्षा प्रदान करते हैं।[9]

जसवीर एस सूरा **(2008)** अध्ययन से पता चलता है क भारत में आरआरबी की समग्र स्थिति काफी उत्साहजनक नहीं है। खराब क्रे डट डपॉजिट रे शयो अभी भी आरआरबी के बेहतर कामकाज पर सेंध लगा रहा है। चूं क आरआरबी को गरीब लोगों के लए एक बैंक माना जाता है, इस लए देश के सभी राज्यों में वशेष रूप से अ वक सत राज्यों में इसकी उपस्थिति चीजों को बेहतर बना सकती है। सरकार को जरूरतमंद ग्रामीण लोगों को ऐसी बैं कंग सेवा प्रदान करने के लए आरआरबी की शाखाओं को जमीनी स्तर पर फैलाना चाहिए। इसके अलावा, यह बैंक प्रबंधन और प्रायोजित बैंक की जिम्मेदारी है क वे बैंक के क्रे डट-जमा अनुपात को बढ़ाने के लए सुधारात्मक उपाय करें जो ग्रामीण भारत में आरआरबी को प्रासं गक बना देगा।[10]

कनिका कृष्णा और नैन्सी साहनी **(2012)** ने "भारत में आरआरबी'एस का वत्तीय प्रदर्शन मूल्यांकन" प्रका शत कया, जिसका मुख्य उद्देश्य भारत में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के वकास-पैटर्न और वत्तीय प्रदर्शन का अध्ययन करना था। कया गया अध्ययन प्रकृति में वर्णनात्मक था और 2006-2012 की अव ध के लए आरबीआई और नाबार्ड की प्रका शत वा र्षक रिपोर्ट से डेटा एकत्र कया गया था। समामेलन और कई अन्य कारकों के कारण अध्ययन में आरआरबी के वत्तीय प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव देखा गया है।[11]

3. अध्ययन का महत्व

व भन्न मामलों में व भन्न लेखांकन उपयोगकर्ताओं के लए वत्तीय वश्लेषण का बहुत महत्व है। आय ववरण, बैलेंस शीट और अन्य वत्तीय डेटा व्यय और आय, लाभ या हानि के स्रोतों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं और व्यवसाय की वत्तीय स्थिति का आकलन करने में भी मदद करते हैं। नाबार्ड के प्रदर्शन का पता लगाने के लए वत्तीय ववरणों का वश्लेषण व भन्न उपकरणों का उपयोग करके कया जाता है।

4. अध्ययन के उद्देश्य

1. नाबार्ड बैंक की उत्पादकता की जांच करना
2. नाबार्ड बैंक की लाभप्रदता के बारे में जानें
3. नाबार्ड बैंक की कार्यकुशलता का परीक्षण करना
4. नाबार्ड बैंक की पूंजी पर्याप्तता का मूल्यांकन करना
5. नाबार्ड बैंक के स्वास्थ्य का मूल्यांकन करना
6. संप त्त और देनदारियों में परिवर्तन जानने के लए
7. अचल संप त्त, स्वयं के फंड और शुद्ध लाभ के वकास प्रतिशत का मूल्यांकन करना।
8. नाबार्ड बैंक के बेहतर प्रदर्शन के लए सुझाव देना।

5. अनुसंधान पद्धति

रिसर्च डजाइन: इस स्टडी में क्वांटिटेटिव रिसर्च को अपनाया गया है।

समय अव ध: अध्ययन में नाबार्ड बैंक के वत्तीय प्रदर्शन की समीक्षा के लए 2015-2019 से शुरू होने वाली वचाराधीन समयाव ध को शा मल कया गया है।

डेटा का प्रकार: इस अध्ययन में उपयोग कए गए डेटा को द्वतीयक स्रोतों जैसे वेबसाइटों, रिपोर्ट, पुस्तकों, पत्रिकाओं, पत्रिकाओं आदि के माध्यम से एकत्र कया गया था।

प्रयुक्त उपकरण: अनुपात वश्लेषण और वकास वश्लेषण।

6. परिणाम और चर्चाएँ

ता लका **1-** संप त्त अनुपात पर रिटर्न

वर्ष	शुद्ध आय	कुल संपत्ति	आरओए
2015	240.32	28580.86	0.84
2016	252.38	31038.49	0.81
2017	264.55	34826.03	0.76
2018	296.19	40664.16	0.73
2019	336.45	48747.04	0.69

ता लका **2-** ब्याज कवरेज अनुपात

वर्ष	ईबीआईटी	ब्याज	आईसीआर
2015	342.14	1292.80	0.26
2016	365.27	1543.86	0.24
2017	388.68	1626.79	0.23
2018	435.37	1784.71	0.24
2019	495.93	2219.87	0.22

ता लका **3-** शुद्ध ब्याज मार्जिन अनुपात

www.ignited.in

वर्ष	शुद्ध ब्याज	कुल संपत्ति	शुद्ध ब्याज मार्जिन अनुपात
2015	233.84	28580.86	0.0081
2016	227.31	31038.49	0.0073
2017	280.09	34826.03	0.0080
2018	337.90	40664.16	0.0083
2019	394.31	48747.04	0.0081

ता लका **4** - पूंजी जमा अनुपात

वर्ष	पूंजी	जमा	पूंजी जमा अनुपात
2015	500.00	18645.42	0.027
2016	530.00	18978.63	0.028
2017	670.00	19441.48	0.034
2018	1058.00	21444.99	0.049
2019	1258.00	22414.66	0.056

ता लका **5-** क्रे डट जमा अनुपात

वर्ष	क्रेडिट	जमा	क्रेडिट जमा अनुपात
2015	24589.94	18645.42	131.88
2016	26049.34	18978.63	137.26
2017	30495.51	19441.48	156.86
2018	35211.05	21444.99	164.19
2019	43027.26	22414.66	191.96

ता लका **6-** अचल संप त्तयों की वृद् ध

वर्ष	निश्चित संपत्ति	वृद्धि %
2015	32.52	-Ve
2016	35.25	8.39
2017	39.08	10.87
2018	47.12	20.57
2019	50.58	7.34

ता लका **7-** स्वयं की नि धयों की वृद् ध

वर्ष	स्वयं के फंड (राजधानी और आरक्षण)	वृद्धि %
2015	2460.09	12.56
2016	2742.60	11.48
2017	3147.09	14.75
2018	3831.11	21.73
2019	4367.37	13.99

ता लका **8- Growth of Net Profit**

वर्ष	शुद्ध लाभ	वृद्धि %
2015	240.33	29.19
2016	252.38	5.01
2017	264.55	4.82
2018	296.19	11.96
2019	336.45	13.59

7. निष्कर्ष

- वर्ष 2015-2019 से आरओए अनुपात में गरावट का रुझान दिखा रहा है। चूं क कुल संप त्त और शुद्ध आय में स्थिर वृद् ध दर है।
- आईसीआर अनुपात वर्ष 2015 की तुलना में वर्ष 2019 में गरावट की प्रवृ त्त दर्शाता है।
- एनआईएम अनुपात 2015 और 2019 में समान रहता है। वर्ष 2018 के दौरान इसमें वृद् ध की गई है।
- पूंजी जमा अनुपात में पूंजी के साथ-साथ जमा में वृद् ध के कारण 2015 से 2019 तक बढ़ते रुझान को दर्शाता है।
- जमा पर उधार देने में वृद् ध के कारण वर्ष 2015 से 2019 तक ऋण जमा अनुपात में वृद् ध की प्रवृ त्त दिखाई देती है।
- वर्ष 2019 को छोड़कर वर्ष 2015 से 2018 के दौरान अचल संप त्त की वृद् ध में वृद् ध हुई है।
- नाबार्ड बैंक के स्वयं के कोष में स्थिर वकास दर है। रिजर्व और सरप्लस में बढ़ोतरी के चलते 2015, 2017, 2018 में इसे बढ़ाया गया है।
- 2015 से 2019 के दौरान अर्जित लाभ में वृद् ध के कारण शुद्ध लाभ की वृद् ध में वृद् ध हुई है।
- 2015 और 2019 के बीच आरओए का माध्य 76% है और माध्य की औसत दर 5.104% है
- 2015 और 2019 के बीच ICR का माध्य 25% है और माध्य की औसत वृद् ध दर -3.96% है।

www.ignited.in

- 2015 और 2019 के बीच NIM का माध्य 0.0079% है और माध्य की औसत वृद्ध दर लगभग 0.26% है
- 2015 और 2019 के बीच औसत पूंजी जमा अनुपात 0.039 है और माध्य की औसत वृद्ध दर लगभग 21% है।
- 2015 और 2019 के बीच औसत क्रे डट जमा अनुपात 156.43 है और माध्य की औसत वृद्ध दर लगभग 10% है।
- 2015 और 2019 के बीच पी.एल की औसत दर 277.98 है और औसत औसत दर लगभग 9% है।

8. सुझाव

- बैंक को परिसंप त्त लागत कम करके और राजस्व बढ़ाकर अपना आरओए बढ़ाना होगा।
- बैंक उच्च लागत पर उधार लेने के बजाय अपनी स्वयं की नि धयों से अ धक नि धयां बना सकता है।
- उन्हें अपनी स्थिति बनाए रखने के लए जमा रा श पर उधार देना कम करना चाहिए।
- बैंक को अचल संप तयों, अपनी नि धयों और शुद्ध लाभ की वृद्ध पर अ धक ध्यान देना चाहिए।

9. सीमाएँ

- व्यवसाय की दक्षता का पता लगाने के लए अनुपात की तुलना पछले परिणामों या समान व्यवसाय के परिणामों के साथ की जानी चाहिए।
- वत्तीय स्थिति को इं गत करने के लए अकेले अनुपात पर्याप्त नहीं हैं।
- खातों में हेराफेरी हो सकती है जिससे परिणाम गलत हो सकते हैं।
- आदर्श अनुपातों के लए कोई अंतिम मानक निर्धारित नहीं कए जा सकते हैं।
- यह एक मात्रात्मक वश्लेषण है न क गुणात्मक वश्लेषण।

10. भ वष्य के अनुसंधान के लए गुंजाइश

आगे के वर्षों में नाबार्ड के वत्तीय प्रदर्शन का वश्लेषण करके अध्ययन को बढ़ाया जा सकता है, और यह वशेष खंड का वश्लेषण करके कया जा सकता है।

11. निष्कर्ष

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य नाबार्ड बैंक के प्रदर्शन का मूल्यांकन करना है। इस अध्ययन से पता चला क बैंक ने बहुत अच्छा प्रदर्शन कया है। बैंक अपने ROA अनुपात, ICR अनुपात और NIM अनुपात में भी सुधार कर सकता है। बैंक अपने स्वयं के कोष से अपनी पूंजी बढ़ाकर जमा पर उधार देने को कम कर सकता है।

12. संदर्भ

1. अनीता, जेबासेल्वी, "ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने के लए नाबार्ड द्वारा की गई वत्तीय पहल पर एक अध्ययन" ISSN: 0474- 9030 Vol-68-Isue-1-जनवरी-2020।
2. प्रो. डॉ. वंदना के. मश्रा, "प्राथ मकता क्षेत्र ऋण में नाबार्ड द्वारा निभाई गई भू मका का एक अध्ययन", + जीजेआरए - शोध वश्लेषण के लए वैश्विक पत्रिका, वॉल्यूम -4, अंक -8, अगस्त- 2015, आईएसएसएन नंबर 2277 - 8160।
3. अव करण, एन.के. (1999)। द ए वडेंस ऑफ ए फ शएंसी गेन: द रोल ऑफ मर्जर एंड द बेनि फट्स टू द पब्लिक। जर्नल ऑफ बैं कंग एंड फाइनेंस 23, 991-1013। ए लंगर, पी। (1994)। कृ ष बैंकों के दक्षता वश्लेषण से संभा वत लाभ।
4. ए लंगर, पी. (1994)। कृ ष बैंकों के दक्षता वश्लेषण से संभा वत लाभ। अमेरिकन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चर इकोनॉ मक्स, 76 (3) पीपी.652-654।
5. गुप्ता, आर.वी. (1998)। वा णज्यिक बैंकों के माध्यम से कृ ष ऋण पर उच्च स्तरीय स मति की रिपोर्ट। भारतीय रिजर्व बैंक, मुंबई।
6. अनीता, जेबासेल्वी, (2020) द ए वडेंस ऑफ ए फ शएंसी गेन्स: द रोल ऑफ मर्जर एंड बेनि फट्स टू द पब्लिक। बैं कंग और वत्त जर्नल 23, 991-1013।
7. प्रो. डॉ. वंदना के. मश्रा (2015) कृ ष बैंकों के दक्षता वश्लेषण से संभा वत लाभ। अमेरिकन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चर इकोनॉ मक्स, 76 (3) पीपी.652-654।
8. वीरपॉल कौर मान और अमृतपाल संह (2013)। वा णज्यिक बैंकों के माध्यम से कृ ष ऋण पर उच्च स्तरीय स मति की रिपोर्ट। भारतीय रिजर्व बैंक, मुंबई।

www.ignited.in

9. रॉबसन व लयम बी.पी., बर्गे वन फ लप (2012) परफॉर्मेंस हाइलाइट्स ऑफ बैंक्स, 1997-98, इं डयन बैंक्स एसो सएशन, मुंबई।
10. जसवीर एस सूरा (2008) "भारत में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी) की प्रभावकारिता: एक पारंपरिक वश्लेषण", JIMS-8M, Indian journals.com।
11. कनिका कृष्णा और नैन्सी साहनी (2012) "ए स्टडी ऑफ़ बैंक ए फ शएंसी टे कंग इनटू अकाउंट रिस्क प्रेफरेंसेस", जर्नल ऑफ़ बैं कंग एंड फाइनेंस, वॉल्यूम 20, नंबर 6, 1025-45।

Corresponding Author

Rakesh Meena*

Research Scholar, University of Rajasthan